तीव्र पुरुषार्थ - 7

➢➢ उपराम अर्थात.....

➳ _ ➳ ऊपर वाले राम के साथ रहना

→ हमारा सारा पुरुषार्थ ही इसलिए है की मरते समय मुख पर राम का नाम आ जाए.. अंत मति ओ गति हो जाए

➳ _ ➳ आराम करना

➳ _ ➳ साक्षी

→ निर्संकल्प स्थिति

➳ _ ➳ DETATCHED

→ सब कुछ करते हुए भी बुधीयोग ऊपर लटका रहे

➳ _ ➳ अप्रभावित

➳ _ ➳ अनासक्त

→ हर तरफ से स्वयं को समेट लेना

➳ _ ➳ न्यारे

→ सिर्फ एक से प्रीत

➢➢ UPRAM

➳ _ ➳ U = UPRATI

→ समपूरण विरक्ति (वैराग्य) की अवस्था

→ किसी की बुराइयां देखने पर / किसी घटना से वैराग आना सच्चा वैराग नहीं.. यह –VE वैराग है

→ **विवेक / ज्ञान के आधार पर वैराग आना चाहिए... यह +VE वैराग है**

➳ _ ➳ P = PARE KI AVASTHA

→ इस संसार की घटनाओं, देह और देह के संबंधो की स्मृति से ऊपर उठना

➳ _ ➳ R = REMEMBRANCE

→ अखंडित याद

→ याद करना नहीं पड़ रहा... याद स्वतः और NATURAL है

➳ _ ➳ A = AHANKAAR SE MUKT

→ “मैं योगी हूँ... मैंने क्लास अच्छी कराई” का अहंकार चट्टान समान आगे खड़ा होता है

→ बहुत बार हमें पता ही नहीं होता की मेरे अन्दर अहंकार है

➳ _ ➳ M = MOHJEET (सम्पूरण नष्टोमोहा)

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 7 & 8 Of Teevra Purusharth Book

---